Artistic Narration: *A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art* **ISSN (P): 0976-7444**
Vol. IV. , 2013

यूरोप का स्वछन्दतावाद एवं इसके प्रमुख कलाकार

सैयद अली जाफर
वरिष्ठ प्रवक्ता
चित्रकला विभाग
डी०एस० कॉलिज,
अलीगढ़।

यूनानी कला की अन्वेषण तथा रोकोको कला शैली के विरोध में नवशास्त्रीयवाद की जो प्रवृत्ति यूरोप में उत्पन्न हुई थी उसे एक अन्य बलवती भावना ने दबा दिया। यह प्रवृत्ति स्वछन्दतावाद के नाम से जानी जाती है। इस भावना के उदय होने का मुख्य कारण यह था कि अब कलाकार पुराने आदर्शवादी सौंदर्य–शास्त्रीय नियमों से उकता गये थे और वह नये–नये अन्वेषण कर रहे थे अर्थात् वह किसी वस्तु विषय को अपने बौद्धिक स्तर से परखते थे और उसे उसी आधार पर निरूपित करना चाहते थे। धार्मिक तथा अन्य परम्पराओं को पूर्णतः त्याग कर लोग विशुद्ध तर्क के आधार पर सोचने लगे थे। परिणामस्वरूप शास्त्रीयता आदि का इस समय कोई महत्व नहीं रह गया। अब कलाकार इन आदर्शों के बजाय सीधे प्रकृति को अपना आदर्श मानकर उसकी ओर आकर्षित हो रहे थे। फ्रांस में जेरीकाल्त तथा दिलाक्रा जैसे चित्रकारों ने नवशास्त्रीयवाद का पूर्ण रूप से बहिष्कार करते हुए ब्रिटिश दृश्य चित्रण के स्वछन्दतावादी तत्व को जोड़ दिया जो ब्रिटेन के महान प्रकृति चित्रकार कोन्स्टेबिल तथा टर्नर की कलाकृतियों को देखने के बाद उनके इस आन्दोलन को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ था जिसका स्वरूप फ्रेंच चित्रकार दिलाक्रा की कृतियों में देखने को मिलता है जिसे उपयुक्त परिस्थितियों के साथ–साथ सन् 1830 की फ्रेंच क्रांति से भी प्रेरणा मिली थी।

जेरीकाल्त को फ्रेंच स्वछन्दतावाद का अग्रदूत कहा जाता है जिस पर नवशास्त्रीयवाद के चित्रकार ग्रास का बहुत प्रभाव पड़ा। जेरीकाल्त ग्रास के चित्र में धूप में चमकती त्वचा वाले दौड़ते हुए चितकबरे अश्वों को देखकर इतना प्रभावित हुआ कि उसने इसी प्रकार के प्रकाश के तकनीक में एक अश्वरोही का व्यक्ति चित्र बनाया जिसने

सन् 1812 के फ्रेंच सैलून की प्रदर्शिनी में हलचल मचा दी। जेरीकाल्त ने सन् 1819 में ''द राफ्ट ऑफ मेडूसा'' नामक चित्र बनाया जिसमें भग्न मेडूसा जलपोत का एक टुकड़ा पानी पर बह रहा है और उस पर जान बचाने हेतु असहाय यात्री एक दूसरे को रौंदते हुए शिखर पर पहुँचने को प्रयासरत हैं। द राफ्ट ऑफ मेडूसा नामक चित्र ने फ्रांस के कला जगत में एक हलचल मचा दी थी जिसकी रचना के लिए जेरीकाल्त उस दुर्घटना में बचे हुए यात्रियों, घायलों तथा डूबी हुई लाशों आदि का प्रत्यक्ष अध्ययन किया था और उस स्थान की भी यात्रा की थी जहाँ इस जलयान की दुर्घटना हुई थी। यह चित्र स्वछन्दतावाद के मील का पत्थर साबित हुआ।

जेरीकाल्त की प्रशंसा फ्रांस की अपेक्षा इंग्लैण्ड में अधिक हुई। इंग्लैण्ड से वह यात्रा के दौरान चित्रकार कोन्स्टेबिल के कुछ चित्र लाया था जिसमें फ्रांस को तत्कालीन ब्रिटिश कलाकारों के प्रकृति प्रेम का पता चला। इन चित्रों ने स्वछन्दतावादी आन्दोलन की आग में घी का कार्य किया। परन्तु दुर्भाग्यवश जेरीकाल्त अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सका परन्तु उसके इस आन्दोलन को आगे बढ़ाने का कार्य चित्रकार दिलाक्रा ने किया।

दिलाक्रा फ्रांस में स्वछन्दतावादी आन्दोलन का एक प्रमुख चित्रकार था जिसका जन्म शरेण्टन में हुआ था

जहाँ रंगों की विविधता और खुली धूप ने उसकी रुचियों को दिशा प्रदान की जिसका प्रभाव आगे चलकर उसकी कलाकृतियों पर पड़ा। बाद में वह पेरिस आ गया और पूर्ण रूप से अपनी कला शिक्षा आरम्भ की। आरम्भ में वह चित्रकार गेटिन का शिष्य था जहाँ चित्रकार जेरीकाल्त भी कार्यरत था जिसका प्रभाव दिलाक्रा पर पड़ा। फलस्वरूप दिलाक्रा इंग्लिश दृश्य चित्रों की ओर आकर्षित हुआ उसने चित्रकार रूबेन्स तथा वेरोनीज़ के चित्रों का भी अध्ययन किया।

सन् 1824 तथा 1829 में उसने ''मैसकर ऑफ सियो'' एवं ''हे वैन'' शीर्षक चित्र चित्रित किया जिसमें स्वछन्दतावादी कलाकारों को बहुत प्रशंसित कर दिया। उल्लेखनीय है कि वह अपने इंग्लैण्ड के भ्रमण के समय चित्रकार कोन्स्टेबिल के एक चित्र से इतना प्रभावित हुआ था कि वहाँ से लौटकर अपने चित्र ''मैसकर ऑफ सियो'' को पुनः चित्रित किया और उसमें कोन्स्टेबिल जैसे चमकदार रंग भरे जिसको देखकर शास्त्रीयवादी कलाकार बहुत रुष्ट हो गये। हालांकि नवोदित कलाकार इस चित्र से बहुत प्रभावित हुए क्योंकि इसमें जिस विधि से रंग लगाये गये हैं उनमें सजीवता, कम्पन, झिलमिलाहट तथा रंगों के विज्ञान की पूरी जानकारी है जो उन्नीसवीं सदीं में हिस्टोरिकल विषयों पर प्राकृतिक रंगों की विजय थी।

सन् 1830 में दिलाक्रा ने ''द बैरीकेड ऑफ लिबर्टी गाइडिंग द पीपुल'' नामक चित्र अनुरंजित किया जिसमें सन् 1830 में फ्रेंच में हुई क्रांति से प्रेरणा ली गई थी। साथ ही साथ यह कृति कला की स्वतन्त्रता की भी घोषणा थी। जब सन् 1831 में यह चित्र प्रदर्शित हुआ तो राजनीतिक अधिकारियों ने इसे राष्ट्र के निधि के रूप में क्रय कर लिया जो आज लूब्र संग्रहालय में फ्रांस की मुख्य निधि का अंग है।

दिलाक्रा को प्रभाववाद का पूर्वज कहा जाता है। उसने रंगों के द्वारा प्रकाश की क्षणिक स्थितियों की व्याख्या की है। उसने अनावृताओं द्वारा प्रभाववाद का सीधा नेतृत्व किया है। इसके चित्रों में यह अनावृताएं स्वयं

अप्रत्यक्ष होकर रंगों की क्रीडा मात्र रह गई। रंगों को पहले से मिश्रण न करके दिलाक्रा ने गढ़नशीलता की दिशा में उन्हें धब्बों के रूप में लगाया। इस युक्ति से दिलाक्रा की आकृतियों में नया जीवन आ गया। फलस्वरूप परिवर्ती युग के प्रभाववादी कलाकारों को रंगों के नये प्रयोग करने की प्रेरणा मिली। सन् 1830 में हुई फ्रांस की क्रांति का उसने अपने चित्रों के द्वारा अभिनंदन किया। कला विद्वान हर्बर्ट रीड के विचार से वह बहुमुखी प्रतिभा का कला था और स्वछन्दतावाद की सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। मोरक्को आदि की यात्रा से उसने पश्चिमी कलाविदों की पूर्वी कला में रुचि जागृत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

सन्दर्भ :–

1. *मिनेचर हिस्ट्री ऑफ यूरोपियन आर्ट– आर0एच0 विलेंसकी*
2. *आउट लाइन ऑफ आर्ट– विलियम आरपेन*
3. *इंसाइक्लोपीडिया ऑफ आर्ट*
4. *कलादर्षन– शाचीरानी गुरटू*